

आशा भोंसले

७७१

ASHA ARCHIVES

(R)

सुख मन्दिर

771

ASHA ARCHIVES

ॐ नमः श्रीमहादेवे नवाय नमः ॥ यवनाजसंयमानः
पावनाद्युपंकजं यासजसुसुमुमिनु ॥ खनं कृपाक
नं ॥ नानदादिजातिवृत्तवन्दिनं दिगं येन ॥ कामिका
पूनाधिनाथकासहेनवंहज ॥ १ ॥ एनकाटिलखनं
हवादिनानकंपनं नासकं ० मासितार्थदायकं तिसा
वनं ॥ कासकासमसृजासनासकनरुमं कामिका

पूनाधिनाथकासहेनवंहज ॥ २ ॥ सुसटंकपागदः
धुपाहिमादिकानर्धं ॥ मकारमादिदवमृजासं
निनामयं ॥ ३ ॥ एमविक्रमश्रियविविक्तताधुवप्रियं
कामिकापूनाधिनाथकासहेनवंहज ॥ ४ ॥ उकिमूः
किंदायकं प्रगन्तयूधवडनं ॥ एववसुसंतिनान्नस
यसाकविगुहं ॥ निकसन्ननासुहमकिंकिदीसस

कुरंगं कामिकायनाधिनाथकासहेनवंहज ॥ ५ ॥ धर्म
संघुपासनं द्धधर्ममार्गनागनं कर्मयोगमात्रकः
सुगमदायकं विभुं ॥ ६ ॥ अथ विधिकं भगवत्पराह ता
कमधुतं कामिकायनाधिनाथकासहेनवंहज ॥ ७ ॥
॥ ८ ॥ अतस्तं नायकं विभुं स कृत्वा भक्तिमतिनं कामियाः
सिंहाकपुष्पपाय ॥ ९ ॥ धर्मकपुष्प ॥ नीतिमार्गकायि

दं पुनातनं जगत्पतिं कामिकायनाधिनाथकासहेः
नवंहज ॥ १० ॥ श्रुद्धां सति नृपक्षजाधुकासितं
निदृष्टिपातनं सुपायजालमृगं सत ॥ ११ ॥ श्रुद्धि
दायकं कपालमासिकाधनं कामिकायनाधिनाथका
सहेनवंहज ॥ १२ ॥ नन्तु पादुकापुलाहिनामयादशु
भक्तं नित्यमद्वितीयमिष्टदेवतं नित्यं नृप ॥ १३ ॥ मृत्यु

यनामनकनासदसुलीषधं कामिकापूनाशित्ताथका
 सहेनवंतज॥ कालहेनयासंकपथानिऊमनादुन
 हानमृनिसाधनंयुगलपूधवर्द्धन॥ भाकमादयः
 यसाहकायितापनामनंयेयुयानिकालहेनवापि
 संनिधियुवंधा॥ २॥ ॥ ॥ ॥ मनुमंकनावायविनवि
 गेकासहेनयासंकसंपूध॥ ॥ ॥ ॥ नमभशामाहका

य उक्ता धीकमलन्तु सोमवदधीमाहृग्वनी निनया
 कीमानानिपुतर्यधमनकनीतक्रावृधवेधुवाया
 यानाहीचनद्यानयत्यनमृखिन्नुग्ववक्राशीध
 यामृधुगधीनाथुरेलवगधालनक्तममाहृकाध
 नवदुर्गया ॥ ॥ १९ ॥ नमः ॥ धीवक्रायधीममाहृकायधीम
 हावयीहृगवादिनिहृन्नामाहापृषधतादवीजगज्ञा

नमो भगवते वासुदेवाय

१७ नमो ह ग व र वा सु द या य ॥ ज न म ज य उ वा च ॥ द्रा प
न व स म् त ना न ग न द ह सि ना य न भ ग न्नां दृ क ता न
ज न्म ज य म हा वं ता ॥ द्रा य न र ग स उ स ति ह व द ह सि ना
य न न ग न स ज न म ज य म हा ना ज न गु न्ने न म्पा य न
४ प षि ण्य न या कं द न ॥ २ ॥ क थ वि मां ग ह य न ध म्म
या नि य धि वि स न वं स द ह ता त्ति ज क थ य स म हा

मू नि ॥ द गु न्ज न म्पा ज य धि षा न या कं ध म्म वा धु स
न य रु या व ग त्थ व न्ध गु ति खं म हा को उ कं रु स वि स्ता
न या स क हा व वि का य मा न ॥ २ ॥ वे णं म्पा य न उ वा च ॥
गृ ध्ना ज य व रु मि क थ या मि न सं ग य नु क या स द
द व ष्ठं द द न स वं मू नि ॥ य का दि म ष य स व वे मा
वे मा स रं ध नि भ वि ष्ठ दे व स मा य क्क न ति व द वि ना

यक ॥ गथा सन सति गंगा कलवना तथा हि गंगा गंध
र्वाग्नि गंगा सन सति गंगा हवता गंगा गंगा मू
नि गंगा दवर्षि ना नद सत्ता न न मे सत्ता द्रविंद
व ना न दवा कम पु वि तु ॥ ३ ॥ ॥ **दुमहा** न जं जन मज
यं जन धरं कृत पात वं न सं द द म मा ल कृ द्वादि
न स र्वादि दव ग न तु कादि मधि ग द अग्नि नी कृ

मान विष्णु सूर्य वत्त मा ग द स ग न सति गंगा गंध
र्वाग्नि ग न व न सति ग न ध य नि द व ग द सं य र्धु म् द व स
रा द ये वा व वा द व ल स ध था य स म ति द क ति ॥ ७ ॥
रु स्य वा द ना न द ज षि ग न अ का स्मा त वि का दा व शी
रु व न म स्का न या दा व कृ ष्ठि न रं ख काले ॥ ४ ॥ ॥ ना
न द उ वा व ॥ द व सति क ना ना म् तु का वि ष्म म द्वा न

भयुषिष्ठिनसमानाजाननुतानरुविष्ठाति॥ द्रुक्कावि
 समद्रुक्कनश्चसंस्तानसंयुषिष्ठिनवसमाननाजानन
 मद्रुक्कावचोदमद्रुक्कावचोदमद्रुक्कावचोदमद्रुक्कावचोद॥ ॥ सत्यवादि
 जितकायधर्ममित्युवर्हता॥ तस्यसत्यसमानासि॥ धर्म
 मयुक्तायुषिष्ठिन॥ गतिहनाजायासतासत्यज्ञाकक्षा
 धर्जनयुक्त्यादधर्मसर्वतठवे॥ सत्यंसमानसत्य

[illegible]

ज्ञानमदुःखं च नानन्दं न ददतस्तथा सङ्गालं ॥ १॥
यैश्च त्यागं वा वाचं धर्माणि हर्षनि स न न क न नृप न य
स्वामि म न युञ्जयुषिष्ठिन ॥ १॥ यथयुषिष्ठिन यावदुन्नाखं
ददात ददतस्तथा सङ्गालं धर्मरुतसां न न न न न न न
स्य धुगु विना य री न न न न न न न न न न न न न न न
धर्मास्मा मं ज न ग र थ स र य ध का व चि न न य व च न न ॥ १॥

॥ ॥ विविधधर्मनामकषु आगता साम हि हृतं ॥ निव
हं ल न र य च न न न न न न न न न न न न न न न न न
धर्मनामकषु विविध न न न न न न न न न न न न न न न
स स व लं ॥ १॥ ॥ धर्मनामकषु न न न न न न न न न न न
कि र्ति ॥ १॥ उ च्छादि द व सा क र व ग्रा सं श्र द ति ना य नि ॥ १॥ ध
र्मनामकषु न

वपुःपुष्टिदिननाजाया नाक सास्यं हस्तिनायुत्र (थ) न क
नवनं ॥ १० ॥ ॥ नाम्मलं विपुलं (गु) वृत्तं विपुलं विपुलं
नं भुव नं मल्य लोकं सुसह्यं नुवत्तं दम्भतं ॥ गच्छिदद
मध्यालसा निम्मलं रस्यं च तकाद विपुलं वायस्य दद
हिद हिद विमिथस सासा किकि साय मग्न क किमय
गुलि ॥ ४ ॥ नवनं च यमव समानमदथ विदं दं ॥

हस्तिनायुत्रि ॥ ११ ॥ ॥ तय कां च नव द्धुं हं अग्नि काटि
समायमा ॥ १२ ॥ ॥ पूर्यमासां समकाति सूर्य काटि समय
हं ॥ यथिद दस रमस्यं नाज गत्वं (थ) नं च धर्म नाजान
नाज गत्वं सास गच्छिद कलसा पाकयाद तया वद्विथ
वाह काटि अग्नि यातज समान पूर्यमाया चं उमा (थ)
हिद सूर्य यातज पूर्य ॥ १२ ॥ ॥ नाज दानं च सं प्राक च ॥

[illegible]

न ता य द ता य द ती, न ता य द न स द रु सं ले सा क नं ना
द ते ॥ ११ ॥ ॥ नृ सि म वि स द श्र ना वा क द स्य दि न दि
न न भुं ज न क न क या न षु य वि छि न स्य मं द नं ॥ य य
दा त म वि प नि कि कि छि यो ले या था हा स रं ज न या च या
व वि का क य वि छि न मा हा न ज या कृ ता रु सा ध र्क या धु न
न धा सं ॥ १२ ॥ ॥ म य या व ष न ना जा पु ति वा क य दा म्य द

मद्रुधायी आगनादानं आधुनापति मद्रुधं ॥ रुद्रात्
पातुमद्यवनाजावतुस्यं धुनं क्रायाथयिदुनाजायाकजं
तेनयंरुद्रं गायधुनासंज्ञां नयंरुद्रं कजातजायाधुना
लस्यवधुनासंज्ञां ॥ १२ ॥ ॥ हिमसंज्ञां उवाच ॥ वां मद्रुधं रुद्रं
मद्रुधं सुदुर्लभं वचतुथर्कं ॥ नुता निवर्धुना नयं कथं द
ननकिं रुद्रं ॥ रुद्रं धुनासंज्ञां नयं वां मद्रुधं रुद्रं वं ॥

सुदुर्लभं यताजातं धुना न हि नरुद्रं मद्रुधं नयं यथ
मद्रुधं धुना ॥ १३ ॥ ॥ वाधुनासंज्ञां मद्रुधं रुद्रं मद्रुधं मद्रुधं
वाकनं ॥ यद्यदि संज्ञां नयं रुद्रं सर्वं सांज्ञां नयं मद्रुधं ॥ यः
धुनासंज्ञां ससांज्ञां नयं पुत्रियायता आदि रुद्रं नयं यः
सांज्ञां रुद्रं ससांज्ञां नयं ससांज्ञां नयं सांज्ञां नयं यः
मद्रुधं नयं सांज्ञां नयं ॥ १४ ॥ ॥ वाधुनासंज्ञां मद्रुधं रुद्रं

समकत्सुखदुखसमाननभपि निडयमकत्वं कथं वद
चतुष्टयं तं ॥ दुःखानयानकृतुत्तिउं गनिमया तं उं सुखं उं
दुःखं उं पञ्चेन्द्रियं उं निययं उं तिस्रं तं उं गत्थयतावधूरु
तं ॥ २२ ॥ ॥ एमसन्तुवा ॥ उनवपयं देग नवर्वा ॥ गमकाया
कागनसुखमम समानस्य सजिवस्य अरुमानविवजि
तं ॥ ॥ वाधुसुखवाच ॥ दुःखानयानमेव निन्द्या क क्काम

वयगा क्कत्वं झा कर्म्म या दनमसवर्म्म उवाह साहि क्कः
धयक्का या गा वाधुसुखय दाम्म मं जागि वाधुसुखय र
तं ॥ २३ ॥ ॥ तिहं अचर थं जस्य वदायस्य यना मुखं न
क्रियादिनसुखा विग्राह्य पि वाधुसुखं उवाच ॥ ॥ गमक्का वा क्क
नया तिहं अमहत्तं ॥ गमक्का या दमस संक्रियादिन
सुखं थं पि द्दक्का वा क्क नयाना वाधुसुखय ॥ २४ ॥ ॥ द न

शुचि विनाशकं पादपुष्पात्संविना ४५ अदृष्टदत्तं गमविः
 न्यासापि वाद्युत्तु उच्यते ॥ ५॥ अथ पूज्यं नवा मपुष्पां कुति
 मसि स्यात् अर्चनं नत् ॥ ५॥ अथ विष्णुपादार्चनं मया स्यात् नत् ॥ ५॥
 मन्त्रायार्चनं वाद्युत्तु उच्यते ॥ ५॥ ॥ कथितं कीर्तनं न
 वा अर्चनं मन्त्रं नत् ॥ ५॥ वदन् नत् ॥ ५॥ अथ वाद्युत्तु
 उच्यते ॥ ५॥ अथ स्रष्टु र्गया व कथितं सायाद्दत्तं नत् ॥ ५॥

धीगमनयार्तं वदन् न विज्ञानयार्तं धर्मैस्त्रयार्तं वा
 ह्यलक्षयः ॥ २४ ॥ ॥ कुतना संमृतकसंका मृगगुरुषु ल
 क्तनः ॥ नुवंगुदित्वया विष्णु सायिवाधुं सुउच्यते ॥ ॥ गी ॥
 वाक्क धनजा नाचत रुहाव नुका दग्धया अन्ननल सिक
 या वा दतया अस्त रकोपि वडा म्म दया ता वाधुं लक्ष ॥ यः
 ॥ २५ ॥ ॥ मधुमहि कृतमर्कं वनं अग्निपदा ययतु ॥ १ ॥ गी

वां कानि विजागन् सायिवाद्युत्तुयतः ॥ १७ ॥ मन्त्रः
 न कस्तिव मरुवेनया सायिवरुसमितयिव सावाव
 मयावसायिवधर्मयातावाद्युत्तुयतः ॥ १८ ॥ ॥ मातन
 यितनः ॥ १९ ॥ वरुद्वर्त्तुयतः ॥ २० ॥ मन्त्रः ॥ यत्पुं
 सायिवाद्युत्तुयतः ॥ २१ ॥ मन्त्रः ॥ नववृक्षाथलिथि
 माम् ववृक्षाकायरुयावसवामयात् ॥ २२ ॥ मन्त्रः ॥

यथा ॥ २८ ॥ ॥ अथ नंदरुषा (नेव प्राह चैव जनाय वै भविष्या
क्रियते जने सापि वा धुल उच्यते ॥ ॥ अथ मनुष्ये न साया
डया कायिवे साने तं रोगाने ता ह वल स थं मं या ता या
धुल सधमय ॥ ३० ॥ ॥ नंदरुषा जने दा नादि संध्यं चैव नि
धुने च मिषाने जने मं कं सापि वा धुल उच्यते ॥ ॥ अथ
मनुष्ये न रोगे न मया तं चि संध्यं सं मं थु न या तं हि दव मु

या कारनरुका नयि वधमया रीया धुसधाय ॥ ३१ ॥
विवादि यजथानात्रिस्तकायकसंगता विना दास्य वः
त्रिणागी साधिया धुसउय रभा मर्म मन्थान् थव कु
हिद कससजायनपु ल कानचिक म् थथिद म् कु दास
नमदयक तासति वधमया रीया धुसधाय जं कु वान
॥ ३२ ॥ ॥ चुकपनिदया लाया मक गुरु नपास यमज

कलकामककु क साधिया धुसउय रभा मर्म मन्थान्
न कु नर्म कु लिंकु सतया व दास्य नमदयक स कु म्
तासता व कु म् वाव रुका लंग यायि वधमया रीया धुसधाय
धाय रु कु वान ॥ ३३ ॥ ॥ इ न धानि यन हानि श्रुति थ गुरु
पागता ॥ साय्य कु क वलं क म् साधिया धुसउय रभा रु
नं धामर्म मन्थान् थव कु स वव श्रुति थ यन द गन व वः

रुनसतं धवदगमवाहुरुलसनां अतिथयार्त्तमनकस्य
कृतंमविह्यतयावथमरुकां अर्त्तनयिवथमैवाधुल
वायज्जकुवान॥३४॥ ॥ आसाकर्मनदातानां युतिमैक
कनिनासापिकृतोयननाधिपसायिवाधुलउवात॥ ॥
क्रमनृषनधवकआसातयकस्य सवायाचकानलिनि
नासायाचकिवधमैवातावाधुलधाय॥३५॥ ॥ अथमन

वममासनानाउकचगुर्तिनामआसहत्तामहापायसायि
वाधुलउवा॥ ॥ अमनननगनीनसदवकुआसागुला
दवेयससंहागयायिवज्जमैयताआसहत्तामहापायसाक
धमैवागैवाधुलधायज्जकुवान॥३६॥ ॥ यंकिनांकाकवाधु
नयगुयागलगईरुमनृषयाकुधवाधुलधायमवया
तिना॥ ॥ अमनयायिवज्जमैवाधुलधाय॥३७॥ ॥ गंरुगक

पुतिहनयुधिष्ठिनस्यमां पुतिभवाधुतस्यसमायुक्ताः
विद्वन्नाधिपः॥ इदं नयानयुधिष्ठिनयाकृष्णायव
जं वदन्तु कृष्णायव नानयानयानयवकमात्रयवकं वाधुतन
भक्तं॥ ३०॥ ॥ लोमसस्तनूदं प्रह्लादाधुतोसहलाधितंभ
गतावचनप्रह्लादवाधुतोसहलाधितं॥ भक्तिसिद्धिमस्तनने
वाधुतयावचनदंढाववाधुतयासहलाधिसायावयुधिष्ठिन

यासमिपसवदावयुधिष्ठिनयाकृष्णस्तं॥ ३१॥ ॥ मातंगिना
गतास्त्वामिनाजयधिनदियतं॥ नानातिआसतत्त्वष्टावि
द्वन्नाधिपः॥ लोमसस्तननेभक्तं इयुधिष्ठिनमहानाजवा
धुतकृष्णवचनदंढासंप्रह्लादनसंवद्वनपालविकादावसा
यमास्तं॥ ३२॥ ॥ युधिष्ठिनउवाच॥ हिमसनामहावा
हाकिमथआगतत्त्वयाभक्तं हि कार्यनाममस्तुतर्थावायक

निवदयत् ॥ धर्तहि मस नया खंददाव यधिष्ठिनम हाना
जान आदये गदय कलं दहि मस म हा वा दू कु नि मि लि न
द्ववया संयुक्तोर्जं कुं न ला हा ति स त या कुं न खंददाव
हा य मा ल ध र्क यधिष्ठिन न आ सु द र्श ॥ ४१ ॥ ॥ ए म स
न उ वा च ॥ ह न् न मा ज न य च ह र्क यो ह नं क थ या म्य दं ४१ ॥
वा धु स आ ग ता दानं ज थ वा क्य नि व द य त् ॥ ध र्त ना जा

या खंददाव हि म स न न ध स नं द म हा ना ज उ नं चा ग ल या दः
ह न् न ज न क्रा य ॥ ४२ ॥ ॥ अ न क यं म य कृ त्वा न मा न स्य म
हा स नं ४२ अ ति थ आ ग ता दानं अ ति वि श्रा न ना धि य ॥ द म
हा ना ज य धिष्ठिन अ न क व र न न उ वा चै वां ग ल या तां न म
ह्वा न अ ति धि कृ स व व अ ति वि श्रा स व ध र्क ए म स न न क्रा
तं ॥ ४३ ॥ ॥ य धिष्ठिन उ वा च ॥ कृ दि कृ दि पू न कृ दि स र्वा

कवकादनमवायुपुत्रजिगाऊन धर्मस्य हिमस्य नया ॥३॥
हवायुपुत्र हविकादन हुनं झाववाधुलयावृत्तान्तग
थिहृथवाधुलया मवायुयाकायहिमसनजयलपू॥
॥४४॥ ॥ किं हृथनिमन्था नां सर्वमभुविस्तानदभवा
नाति हृति याधुल किं नृपस्य वृकादन ॥ हहिमसन
मन्थादकासमभुसयकावगया कृद्वानस यादवा ॥

धुलया नृपगथिहृत्ताव ॥४५॥ ॥ हहिमसन उवाच ॥
काकः काकिसवधुनां कनृपः नर्कत्वावनं भलवगाव
मृदकगवाकं वेवमधूनगा ॥ थगयथिहृतिनयाववद
दावहामसननधालं हमलनाऊवाधुलया नृपकार
काकिसयउत्ताथथिहृत्कनृपमिवाहृत्तसनं मृत्तकका
गसपातमृतिगाहकसाहृत्तसनं कृद्वानगववाकृत्तक

तिमधूनथधिदयाधुमल॥४३॥ ॥युधिष्ठिरनउयाच॥गङ्गा
कृदनायानिवाधुनापायकर्म॥४४॥श्रुद्विद्वानमकचक
थंगस्यगुरुगता॥४५॥थतयुधिष्ठिरननखंददावपूनर्वादय
धिष्ठिननधालंदुदनायानिथनायानमनंदुनिवाधु
लपायकर्मधर्मयतादानवियधकधला॥गङ्गाधु
लकुवाजमनव॥४६॥ ॥समस्तनउयाच॥श्रीगीथभा

गतादानकीकृतंतस्यचकृति॥यथाभक्तिगथादानंय
थाधर्मविधियत॥४७॥रुमहाजाजकुसववश्रुतिथाराकु
जागदन्तंश्रुत्तानतिन॥अर्द्धदंकादानवियावयद्वया
हावविष्कादन्त॥४८॥ ॥नतस्यदभनंतस्यश्रुत्तातवक
दावन॥४९॥महागुहामहात्मानंसगसत्यनराधिय॥रु
युधिष्ठिररुमन्त्रयाश्रुपतिधुश्रुतिथवसमाननन

मन्त्रादासाय मन्त्रादा गवि दधत्तसा मन्त्रावर्द्धितसु सत्य
नंखवमन्त्राजयकंधया ददाव यमिष्ठिनमन्त्रायवा
यावगनायाधुतया नाधकं अनावदावधतमन्त्रादादत
४४२॥ ॥ यमिष्ठिनउवाच ॥ वस्यतामन्त्रागतादा नकुता
वागुहमागता ४४ यथा त्वंदुदयवा कनिर्वदयत ॥ हं अ
तिथकृयाकं नानाया गनानाया गना वादागेथसः

एतत्तं अथ ज्ञावदुनं कनमनसयादुखं कलं मास
४४३॥ ॥ वाधुनउवाच ॥ नाजावधु अवंधुनां नाजाव
रुश्वरुर्कं ४४ यिता मातागु ननां च नृयगु नृ ॥ धनंति
वाधुननधत्तं हं मन्त्राज नाजा रुनं पासा मद्रुका
पासा मासा मद्रुका मिखा रुनं नाजा मासववमद्रुका
रुनं नाजा मासववगु नं नाजा रुनं ॥ ४४ ॥ ॥ दृष्टिस्तवना

नाजा विद्या वलं वदुः ॥ १४१ ॥ मूर्खस्य वलं मोक्षं तं श्रुत्वा
 तस्मिन्नावलं ॥ १४२ ॥ रुमहा नाज श्रुत्वा तं श्रुत्वा नाजा वा
 मया वलं श्रुत्वा विद्या मूर्खस्य वलं श्रुत्वा नानमवाय स्वयां व
 लं श्रुत्वा रुसखा ह्याय ॥ १४३ ॥ ॥ वात्सानां नादनं च वदुः ॥
 पायश्चल वलं ॥ १४४ ॥ आसा धितं मया धितं रुधिरं कृतं लंजनं
 ॥ १४५ ॥ माया तास वलं श्रुत्वा वदुः ॥ १४६ ॥ पायश्चलं वलं च वलं श्रुत्वा

(५)

धनं न जन्मति यदि नु श्रुत्वा न पलाय क कृत्तं विदुः न
 ॥ १४७ ॥ ॥ दुर्बलं दाय तं दानं सुखं पा नु न न न ॥ १४८ ॥ अथ
 दीयत दानं अथ का लिंग पूजनं ॥ १४९ ॥ रुपा धु नाजा या काय य
 धिष्ठि न श्रुत्वा तिया ता विद्या दानं सुखं लक्ष्म्य अथ विद्या ता
 विद्या दानं सुखं श्रुत्वा रुनं अथ पूर्व सावलिंग पूजा या दान
 अथ कुरुत्वा क ॥ १५० ॥ ॥ अनाथ धिंद सत्कानं कृत्वा

ASIAN ARCHIVES

164

卷之五

यहृह संहवतु **४१** लाहिरि स क ल च व क थि नं व ज ना र्द नं
४॥ ह य धि वि ने अ ना थ र्क ज न सि हा व वा ना व थ र्क या अ
ना स स्का न या रं का या का टि का टि य हृ या दा रु न सा क थ
कं मा हा द व या ह व न वि ष न आ द न द री अ व ली या स रु
य मा स **॥ ५५ ॥** ॥ अथ वा रु स व र्क या **॥** ला वि कृ न तं ना धि
य **४१** द न **॥** नि य न ह्ना नि अ ति थ ग रु म ग री **॥** ह न ना

धि य अ ति थ क स उ त ना व आ द न या य मा ला ला यि न
या रु ले स नं थ व द न या रु ले स ना **॥ ५५ ॥** ॥ तै स्य ला र्क
पु य स्ते न अ ति थ स्य व सं ग म **४१** थ वि द र्क अ ति थ क
स व स ना व अ ति थि या ता आ द न न अ न्न वि य मा ल थ
त वा धु स या व र न द दा व य धि वि ने न आ हा द री **४॥**
॥ ५५ ॥ ॥ य धि वि न उ वा य **॥** य स्य **॥** य व ग रु न ना ति क

स्मिन् कालेषु राजनं भ्रूतिथ आगता दानं कथमवपु
युक्तं **॥** दृष्ट्वातिथि (गार्ग्य) याचकं स कृत्वमुं मदयिव अति
थ कृत्वत्त नाडा अतिथि याता आदनने अन्न विरय मास थ
तया धु स या वचन दृष्टाव युधिष्ठिर नन आसु दती **॥**
ॐ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ ॥ यस्तु ॥ अथ गृह नासि कस्मीन
कालेषु राजनं भ्रूतिथ आगता दानं कथमवपु युक्तं

दृष्ट्वातिथि (गार्ग्य) याचकं स कृत्वमुं मदयिव अतिथ कृत्वत्त
नाव अतिथि याता आदनने अन्न विरय मास थ तया धुः
स या वचन दृष्टाव युधिष्ठिर नन आसु दती **॥ ॐ ॥** **॥ य**
धिष्ठिर उवाच ॥ यस्तु ॥ अथ गृह नासि कस्मिन् कालेषु राज
नं भ्रूतिथ आगता दानं कथमवपु युक्तं **॥** दृष्ट्वातिथ
गार्ग्य याचकं स कृत्वमुं मदयिव अतिथ कृत्वत्त नाव **॥**

कुन अतिथयूजायायिवग (थडायाधर्मवानिवधकनमा
ले॥५०॥ ॥ वाधुसउवावा ॥ अर्चणनादिका (येव कनम
लहलानिवधनतथासुसुविप्राप्य अतिथः ॥ ह्यगदियेक ॥ ६
महा नाज धर्ममनुष्यन अर्चमतसा सकिरुनसनं लिनरुः
लसनं अर्चन अतिथायता मिय धगुलिसह्यगदियेक
यिव धगन कु क्किनं वियमासु थवकदवगुलि ॥ ५१ ॥ ॥

अतिथदानतिष्ठन्ति आत्मगुरु पूजाजनं भउदकं वासनापि
ह्य उसा ॥ मां सहकं यं ॥ ५२ ॥ ॥ महा नाज धर्ममनुष्यन अ
तिथकं सवयावे अतिथयातामविसंधमनं नलसा ॥ ५३ ॥
मासहकयादाया रु सपायसाक रुनं लंख तां नसा सुना
पानेयादायाय धन अतिथ यूजायाय मास ॥ ५४ ॥ ॥ अ
तिथविमुखं याति विमुखं पाह दवता भ कातियूजावि न

त्यति बुद्धरुणा पदपद॥ रुम हाना ॥ मम नुषाया क
नम्रतिथि विम्वरुयाव वा निवडा मम नुषाया पितृगण
निमसा रुयिव काति पूजा निरुत् नम्रतिथि या पायथ मय
ता ॥ ५३ ॥ ॥ दवा न नख वदि न सख हान दयातथा ॥ वि
नाम्रतिथि यहन पुन्य स वृत्ति निरुत् सं ॥ रुम हाना जता
लव मद्रा दव पूजा निरुत् सं सं सख मद्रा निरुत् सं सं अ

तिथि या हा काम विद्या न सं पूर्ण पुन्य सुत् सं ॥ ५४ ॥ ॥ या
नावा पितृ वा धुत्ता ॥ गकु वा मित्र यात क ॥ वास दव स मा
प्राति नम्रतिथि स्वर्ग सं कुम ॥ रुय विधि नम हाना ज या धु
लुत् सं सं न गकुत् सं सं मित्र यात करुत् सं सं नम्रतिथि
रुष न क वत्ता व वास दव डा स मान या य मात् स्वर्ग
यात्ता य रुत् नम्रतिथि ॥ ५५ ॥ ॥ नग नव गुरु वा थ न मा

षष्ठेन दितलठभ अ पूर्व यस्तद्व्याचतिथस्तानरुतंततह
त॥ रुमहा नजगम मन्व्यन दससहस्रनं कसह
लेसनं नदिसहस्रनं पृषलिसहस्रनं अर्षिख
दावतिथस्तानयादायापुनं ताकध्वतन अतिथियापु
जायायमासा॥५॥ ॥ मनुहोनं कृतयन अर्षवेवतिले
विना॥ अष्टवक्रवयकन्या दहतसफमं कृतं॥ मंनुदि

नन अर्षतिथियायहृ राम लमदयकं विधुययानम
उमहवमिसा ध्वतनकसगुलरहस्रयायिव॥५॥ ॥
नकुलावाथमाऊला स्वनिवास्तानेधुकनभ अर्षमः
अपिगवस्य कनकपाथनपुछाति॥ नगरं लं हतिरु
नसनं राहस्रसां अर्षमधयहृया गवदनस्रयाथला
सहजुनयावकाव समसं पुर्द्धरुयिवधकं धुगखावा

धुसया कंद दाव हन सवा दाव यधि विन न आ दध
दय कलं ॥ ५८ ॥ ॥ यधि विन उ वाव ॥ कथं व स य गध म
कथं धर्म पुव ह त ॥ कथं यथा य गध म कथं धर्म वि न
॥ ग (य न धर्म दयि व ग (य न धर्म वि न न वा नि
व ग (य न धर्म त य ग (य न धर्म दया व ध कंद नं ॥ ५९ ॥
॥ ॥ श्रुति य उ वाव ॥ स ह्य उ स गध म दया धर्म पुव ह

त ॥ न द मा य था य गध म क्रा ध धर्म वि न गति ॥ स
य न धर्म दय दया न धर्म वि न न वा नि व द मा स
धर्म त य क्रा ध न धर्म दयि व ॥ ॥ यधि विन
उ वा व ॥ का वा मि उ य दौ नै व का वा मि उ गे दू धू व
॥ का वा मि उ न नै व का वा मि उ न ता न क ॥ य न
द ग या मि उ ग मू क या म उ स न य या मि उ ग मू क

नन कानसमिधुसुधर्कं दुनः॥ ११॥ ॥ अगीथउवाच
॥ विद्यामिधुयदः ॥ अथैव लयामिधुगुहसुधभमभुनस्यो
षधमिधुधर्ममिधुयनेरुवे ॥ यनदसयामिधुविद्याः
क्यामिधुमुनागसमिधुमुनागसमिधुडावधि मन
नकाससमिधुधर्मः॥ १२॥ ॥ यधिधिनेउवाच ॥ कथं
उत्तमगच्छसि कथं ह्यसि निवेदयतुं नगत्थनकः ॥

स्याद्यशयिवगत्थनकल्यानयकादयकं कुनकल्यान
शयिवगत्थनकल्यानयानिवधर्कं दुनः॥ १३॥ ॥ अग्नि
पउवाच ॥ वृक्षाद्यकल्यानदयकल्यावृक्षाद्यकल्यान
यित्वावृक्षायाकल्यानयकल्यानयत्थनकल्या
नयाना॥ १४॥ ॥ यधिधिनेउवाच ॥ उत्तमवृक
थं पुनः कथं पुनः नयितुमभकथं ताथपुनः गत

[illegible]

यत्तदयि च धर्कं कनः ॥ १४ ॥ ॥ यथि विन उवाच ॥ किं पृ
 धय मूना स्रानं गगन स्रानं च किं रुनं भगया पि धु पु दानं
 न गम स्रानं मवि वच ॥ १५ ॥ उ मूना स्रानं नया दया कुरुत
 गम स्रानं स्रानं नया दया कुरुत गगन स्रानं नया दया कुरुत
 पि धु थया न कुरुत ॥ १६ ॥ ॥ मृति थ उवाच ॥ वी नान
 ह्यां मदा पृथय दि आत्म यनिर्मलं भगया पि धु पु दानं

न. यिह स्वर्गयुग कृतिः॥ वा नाना निसि स म द्वा पृथक् रूपा गं
म सुभा समि म्म तिरु ला ग या स वि धु थ या न यि ह ला क
स्वर्ग वा ना. पू. धू. या दा वं अ ई या दा न का टि यु का न न ह
क रू ला. र्म म ति या ता न स हा म या दा न स्व म्म वा न ॥ १८ ॥
॥ यथि वि न उ वा च ॥ य स वि ता गृ ह ना सि. मा ता ना सि त
थे व च ॥ अ ता ह मि क थं वं व. म्म ग्म कि गृ ह यु हा ॥ १९ ॥

या कृ स मा म व व म द त द दा कि जा क द म द न कृ म्म. स्र स ग
॥ य द यि व ॥ २० ॥ ॥ अ ति थ उ वा च ॥ य थि मा ता वि ता ऊ स वि
ता हा न य ना य नं ॥ द या स दा द नं य स. स्र स ग्म कि गृ ह
ह व त ॥ मा म म द्म या मा म वृ धि व व म द्म या व वृ हा न
॥ द दा कि जा म द्म या द दा कि जा रु मा कृ स स्र स को म
त ॥ २१ ॥ ॥ यथि वि न उ वा च ॥ क न क म्म म द्म द्म स्र स क

नकर्ममहासुखं॥ कनकर्मलवज्रं कनकर्मपुव
लत॥ ककर्मनमहादुखिरुना ककर्मनमहासुखिरु
सा ककर्मनगर्ववासरुहयना ककर्मनउ॥ १५३॥ थवा
सा॥ ३॥ ८१॥ ॥ अताथउवाच॥ दवैपूजानकहवां तनपू
धमहादुखं॥ अन्नदाननकहवां तनगकृपू॥ ४॥ पुन
॥ दवयाकं हावहकमदयानदु॥ खीरुसा दवयाकह॥

कयादानदयान सत्यदयान थन्नमनूषातामाहाडासु
खीरुस अन्नदानमयादान॥ गकृवाकृसा॥ ८२॥ ॥ पुन
कीयानगीजन साहाथसिधिमवव॥ ननायानिमहा
यासं सुखगकृपू॥ ४॥ पुन॥ पुनकीयनधनसाहज अथा
नननेकसयाना थन्नउ॥ १५३॥ थवासाहासा॥ ८३॥ ॥ पू
षिहिनउवाच॥ कतिश्रीगुलमाकासं कटिगगनतान॥

काभकथंमद्यकृतदानं कतिरुक्तवस्तुनाम् ॥ आकाशगत
संश्रुतसदताश्रकाशमंगुलिनरुद्रदतामद्यनसंख्यम्
नागुलितलाधयुधिगमसकृदता ॥ ८४ ॥ ॥ अतिथउवा
च ॥ चतुर्लंगुलमाकाशं दयागगनतानकाभदमधममर्ष
नमद्या ॥ अहं उवाच ॥ अना ॥ आकाशयतागुलसदताश्र
काशमंगनगतिनं गमसदतामद्यनवागमवकयातासंख

धनाजिधनागलाधयुधिलकृतादता ॥ ८५ ॥ ॥ यधि
विनउवाच ॥ मातुसंजदिशार्कन्यापितायसकृमानक
नकुहिवार्कं नृदंशुलो कस्तदहंसमृदवं ॥ ८६ ॥ अर्धयामा
ममदतायवृवातखगममयाननानेउत्तरातिरुत्ता
॥ ८७ ॥ ॥ अनाथउवाच ॥ तिलमधज्ज्वातं काकमध
रुतासनं ॥ अर्धमधयुतीवैव हनयैवसंजिनिनां ॥ ८८

[illegible][illegible]

दाससुमनया च यथादाससिषियनिस्तननिहं ऊकलाय
कनगाथमनया भव ॥ २५ ॥ ॥ अतिथउवाच ॥ साहस्यमा
दिना नाया नचतिवनि सावना ॥ १७ ॥ साकं मादिती माया स
ससत्येन नाधि ॥ साहस मायान मादयाद तसा लावसं
मवाह मायान सार्मसत्य पाता ससं अह नया कदम
दा नाऊ निम्यवनं काय मदा अधानं प्रसया सवां द

थद कायया लानयहिदु नाजाया पुनिगुरुमहिदथखा
सत्यसंख्यवर्क ॥ २६ ॥ ॥ नद्यानां जलसमूहं पापपुन्यं
नद्यागुरु ॥ १८ ॥ तस्या न्नराज नविष्ठागुरुमेतु नमुहते
॥ १९ ॥ सुनिस्तसमस्तं मुदाव समुद्र सवां निव धतनसम
सुपाय मुदाअ नाजाया कस वा निव धनिय निमिहिन
जनशून्यकनकं मनया सिषियनिस्तं नयागुरुमकु

नजी ध्वान कदव जल मरुया ॥ २२ ॥ ॥ दग हान स
मात लि दस च उ सं मा ध्व ज ॥ द ग ध्व ज स मा व ग्धा द
ग व ग्धा स मा न य ॥ जि क्र मा खि वा व मि सा दू क्र व उ
ल्य जि क्र मि सा व कू क्र मू ना नि मि ज न व उ ति जि क्रो
मू ना नि मि ज व न कू क्र यं ग्धा व उ ति वं ग्धा जि क्र व ग
जा कू क्र व उ ति ॥ २३ ॥ ॥ उ ति व य उ न दि य सं का ना

सर्व न य ति ॥ ग ता त च ग द स र्व न च ति व ति वा
क्र द म ॥ ग ता स द मु वि युं ला म ध मा ना रु धि वि वि न चि
ना मा न ग ता ना जा का व वा के न व द य त ॥ दू रु धि
वि न वा दा व कू ल पा ल या कू स नि ल्य नि ल्य वा क्र द स
द मु ल क स सा वा क्र द म द य म नं दा लु चि वा क्र
दं ता ता ॥ २४ ॥ ॥ रु धि वि न उ वा च ॥ य दू वि र्व स नं

कृत्वा सर्वविषयगृहगतान् अर्द्धवयि श्रुत्वा यि च कथ
यी पु पु कृत्वा ॥ अर्द्धवयि सया त कलवव क्वा थ सं म क
वा क्वा य नि म य त दा व अर्द्ध स ग म कृत्वा ॥ २५ ॥ ॥
माता ग कृत्वा य त क म् व थ अर्द्ध वयि य त म वि कृत्वा य त म
स त त्व वृ ज्ज म न र वि वि न म थ व द्यु स जा ति ते म
न र वा क्वा क म् व ज म न जा व उ थि द र वा थ क्वा व ग थ

स्र द्वा य थ क्वा वि कृत्वा य त व न म् ॥ २५ ॥ ॥ व द्यु स ३
जा ति मा जा स्र स न य स न र वि त ३ न स सं स न व व र न न
त ग उ स्र द्वा य थ ॥ पा पि स्र अ ग ता द्वा न पृ थु
द र वा क न ति य ३ द र वा व र्ष स थ क स व र नि स्र स
र व त ॥ थ व द्यु स व स्र द्वा य दा व क म् य य स क स ग
थ स य क सं स न स थ थि द क व ग थ स्र द्वा य य पा पि

वृद्धानसवाहववपुर्द्धिथायाककवजिमनदाताय
हृयादानसमस्तंनिरुसयाताकनधकं॥२१॥ (K)॥
श्रुतिथउवायपश्रुदनेवेनपापिष्ठाश्रुनकपापकर्म
ना४१हृयाकयपनिह्यागीसापापिष्ठाननाधिय॥५॥
जपापिष्ठमयश्रुनकपापकर्मयादानहाममयाकश्रु
ईमयाकथकनोजापापिष्ठमया॥२२॥ ॥पुस्तकवंसद

मयाकंजथावाकनिर्वदयत॥सहसहसंमयाउकंमम
दावनदियत॥श्रवसनसोयावजनज्ञायागथनिति
रुहाश्रथरुनाययादानिश्रयनंवाहथजनज्ञाया॥
जयावनमइ॥२३॥ ॥श्रावणिकाहिकार्वेवमाद्यीये
श्राविकीरुथ॥ज्ञानदानंनकरुयसापापिष्ठाननाधि
य॥श्रावणपुष्टिमाककउजापारनरुउसायकारिक

पुष्टिमाकृद् कृत्तिका नक्षत्रं सा माघमा पुष्टिमाकृद् म
घनक्षत्रं सा पुष्यमाघ्नं कात्त सप्तमा नक्षत्रं सा माघमा कृत्तिका
नक्षत्रं सा पुष्यमाघ्नं ॥ १०० ॥ ॥ पुष्टिमाकृद् कृत्तिका ॥ त्वं च पु
ष्यमाघ्नं च विनाक्षत्रं पुनपुनश्च समजं हृत्वा कृत्वा
सप्तमं तं च दग्धं ॥ १०१ ॥ पुनपुनं दग्धं तं च दग्धं तं च दग्धं तं च दग्धं
कृत्वा नक्षत्रं विनाक्षत्रं माघमा कृत्तिका नक्षत्रं हृत्वा कृत्वा कृत्वा

कात्त सप्तमा नक्षत्रं सा माघमा पुष्टिमाकृद् म
॥ १०२ ॥ ॥ माघमा पुष्टिमाकृद् कृत्तिका नक्षत्रं सा माघमा कृत्तिका
सप्तमं तं च दग्धं तं च दग्धं तं च दग्धं तं च दग्धं तं च दग्धं तं च दग्धं
सप्तमं तं च दग्धं तं च दग्धं तं च दग्धं तं च दग्धं तं च दग्धं तं च दग्धं
सप्तमं तं च दग्धं तं च दग्धं तं च दग्धं तं च दग्धं तं च दग्धं तं च दग्धं
॥ ॥ पुनपुनं दग्धं तं च दग्धं तं च दग्धं तं च दग्धं तं च दग्धं तं च दग्धं

सत्रपद्यः आगसागुहमम॥ **हृदयवधना** यदविथानिऊन
लाहा यं जायनयवताथनिऊने दर्शनयाहा साधुं लनूय
नऊं कंया दानसवि काता॥ **१०३॥** ॥ **किं लंदुना** नायनाय
वुक्ता विष्णुमहेश्वरं ४५ तथा वाधुं लनूयन पितामगुह
मागता॥ **कसया** लसुं लुता वुक्ता सा विष्णु महुं
नसा यथी हवाधुं लनूयन विकाता हनं ऊवव धर्मसाध

कंदनं॥ **१०४॥** ॥ **थना** वाधुं लनूयधर्मन काययुधिष्ठिन
या सहासाया वरुणिहयमाने रुया वधाल॥ **१०५॥** ॥ **ध**
र्मका वा॥ सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सर्वभक्तु विभनद॥ **क**
हृदयवधि पूव सत्यमं वरु विष्ठिन॥ **हृदयि** छिनऊन
ववृधर्मकृतवत्समसा भक्तु सया ववा ददु निग्रयनं
ऊकाया ऊनववृज खवरव॥ **१०६॥** ॥ **लया** किं हि मयं

लो आगता दं गृह गवः ॥ जस्मा रथं यं ह्युपस्थं वः श्रुदं दवः
चिच्छिन्नः ॥ कनकी हिं युता पत्नी दं दवः कनकया दान सव
या ॥ मन्त्रा अथ सव ह्युता ता पुन्यता ता अ मन्त्रा दय किं ऊं
मन्त्रा दय वः कं धर्म न आ द ग द ता ॥ १०० ॥ ॥ जं जं न रु या
या थ नि स रु ल जं रा प स्या या दा यां रु ल थ नि द गा न जं ना रु
यां स रु ल रु ला जं व वृ रु क स वि का ना ॥ ॥ म न ज न रु यः

धं न जं द व द न नं रु व रु ॥ स र्वा पा व नि न्मं कं ॥ का हि मा द
व ता पु न् ॥ ज व वृ या धं नं य द वि थ नी स म रु पा व नं ता ल
त ला ज व वृ रु द व पु नं क ल पा ल न ज ल रु या व ॥ १०० ॥
॥ ॥ य न ध न य नं हिं सा य स र स्य पु व रु त ॥ म ला रु रु
त ला रु व पु ता नि स रु किं स रु नं ॥ ध नं त व धा द म र रु तः
कं त व धा द पा य म कं यां म रु स म ति रु या व वी नि व ला

नविद्यानयादायज्ञायाधनज्ञायावंधर्मसुगर्विका
तादृयाधुपूतधनसमस्तं कृमि सनधननयमास
॥११२॥ ॥ धनकथामहादयनं नानदमुनिकायायास
नसुतश्रादिनसमस्तसिषिपनिकातावेसम्यायननः
नाजजनमजयकाताथुगुलियुका ननरुषिषिनयक
धर्मनर्थायसातावर्क ॥११३॥ ॥ वेगम्यायनउवाच ॥

धर्मषूदनयतयाविधर्मषूदनयतगुह ॥११४॥ धर्मषूदनयत
मकुजताधर्मताताजयत ॥ धर्मननागंरूपयवधर्मन
मकुदयवधर्मनगुहमेहिदगुलिरुयिवगताधर्मद
ताश्रुताजयरुयिववर्क वेगम्यायनसिषिननाजजन
मजयकान ॥११४॥ ॥ ॐ तिष्ठामहातानतमगताद
म्यायांसदितयाश्रम्यमययदधर्मयुषिषिनसंवाच ॥

प्रथमि नरुहसमाफभ ॥ सनत्तुजदलडुदिठधसा
रूपधुयाहारुभा ॥ ॥

वृक्षा यनि मुह माया देवि महेश्वरि कुमालिदिलवि
ताहि इह यनि वी मुमाहालदि मि दे विगनपतिम
इत वसी गा नि कानि ति से उ भ इत वन मो न मो ॥

(५)

ऊन म देवि न मो ॥ ॥ जे जे चि मे अवतसि वसि वसी मुदु
पति माहाता जा कोसिका से पुन वृमा जे द मदी कोसिकाति
नेदु पति माइ गन पप्पा जे वे धन ह माहाता जा ज्ञान